संपादकीय

विश्व साहित्य में भारतीय साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण अवदान क्या रहा है? इस भारी भरकम सवाल के यूं तो कई संभावित मैराथन जवाब हो सकते हैं, लेकिन इसका अकाट्य संक्षिप्त उत्तर है, इस देश का बेजोड़ लोकप्रिय कथा साहित्य।

हमारा देश कथा-कहानियों का देश रहा है। यह भी माना जाता रहा है कि कथा-कहानी सर्वप्रथम यहां से ही चली है, सबसे पहले पहुंची ईरान, और फिर किस्सों में ढलती पहुंची अरब आगे फिर टर्की और इटली के रास्ते यूरोप पहुंची, और हर किस्सागो के दरवाजे पर इसने दस्तक दी है। बोकशियो, गेटे, ला फोंते, चॉसर सहित कितने ही देशों के सार्वकालिक महान कहानीकारों ने भारत की कथा-कहानियों से प्रेरणा के बीज लेकर स्थानीय संस्कृति, परंपरा की मिट्टी, खाद, सिंचाई से इसे विकसित कर पल्लवित पुष्पित किया है, और कालजई रचनाएं दी है। वेद, पुराण, महाभारत, बौद्धों की जातक कथाएं, जैनियों के विशाल कथा साहित्य भंडार, पंचतंत्र, वृहत्कथा, वृहत्कथा मंजरी, कथा-सरित्सागर, बेताल पच्चीसी आदि कितने कथासाहित्य से समृद्ध हमारे साहित्य का यह खजाना सचमुच अनमोल है। इन कथाओं में तत्कालीन संस्कृति, रीति-रिवाज, लोकाचार, परंपराओं, नैतिक मूल्यों, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था को देखा समझा, सीखा जा सकता है। इतना ही नहीं तत्कालीन इतिहास के तत्वों के शोधन के लिए भी यह कथाएं महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत मानी जाती हैं।

रिपोर्ट

ककसाड़ के पांचवें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर दिल्ली में आयोजित 'आदिवासी भाषा विमर्श'

• रविवार 29 सितंबर को नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत, के सभागार में ककसाड़ के पांचवें वर्ष के प्रवेश के अवसर पर - 'आदिवासी भाषा विमर्श' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अपने स्वागत भाषण में बस्तर, छ.ग. से पधारे ककसाड़ के संपादक, कवि एंव लेखक डॉ. राजाराम त्रिपाठी ने सभी का गर्मजोशी से स्वागत किया और ककसाड़

की ओर से सुश्री वैष्णवी और सुश्री मेधा के द्वारा सभी अतिथियों को पुस्तक और पुष्प दिए गए। ककसाड़ पर अपने विचार रखते हुए डॉ. राजाराम त्रिपाठी ने कहा कि आज पूरे विश्व स्तर पर

आदिवासियों के परंपरागत ज्ञान, कला एवं संस्कृति तथा बोली और भाषाओं को बचाने की व्यापक पहल की आवश्यकता है। एक बोली के गुम होने का अर्थ है उसके पुराने संस्कार, भोजन, कहानियां, खान-पान, कहावतें, मुहावरे अपनी अस्मिता की पहचान यहां तक कि हास्तशिल्प और लोक व्यवहार का गुम हो जाना। वैश्वीकरण तथा बाजार के तत्वों के वशीभूत होकर कई आदिवासी बोलियां विलुप्त हुई हैं। पूरे विश्व स्तर पर इन बोलियों को बचाने की बेहद जरूरत है। इसके लिए एक जिद, जिज्ञासा, आस्था, सामाजिक चेतना और संवेदनशीलता की आवश्यकता है यदि हम बोली-भाषा और जनजातीय चेतना की अवहेलना करते हैं तो इससे हमारा ही नुकसान होगा। क्योंकि जब हम आने वाले कल की जरूरतों का उपयोग, वर्तमान के दुराचरण को सही ठहराने के लिए करते हैं तो हम वर्तमान को दूषित और भविष्य को क्षीण करते हैं सच तो यह है कि वर्तमान में एक जिम्मेदार आचरण ही भविष्य की गारंटी है। और इसी में एक मशाल की तरह ककसाड़ की उपस्थित देखी जा सकती है।

• मुख्य अतिथि प्रो. गिरीश्वर मिश्र, लेखक, शिक्षाविद एंव पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि– कैसा गजब का युग आ गया है कि मनुष्य तथा मनुष्यता

अब मानव संग्रहालय में संरक्षित की जा रही है। मैं समझता हूं कि ऐसे में एक विशेष तरह के हस्तक्षेप की आवश्यकता है। जो यदि संभव हो तो, क्योंकि तभी एक उदाहरण हमारे सामने होगा कि यह क्षेत्र अपने आप में अपने संसाधनों से कैसे खड़ा हो सकता है, आगे बढ़ सकता है। मैं जो समझता हूं कि आजकल एक जो नीति चली है न..! बहुत जगहों पर आर्थिक क्षेत्र में स्पेशल इकोनामिक जोन बनाने की, एस इ जेड बन तो रहा है पर उसका उद्‌देश्य अर्थ की समृद्धि है। पर यहां जो आवश्यकता है वह यह कि उस संस्कृति के हर पक्ष से कैसे स्वयं को समृद्ध किया जाए। जनजातीय चेतना, यह हमारी ऐसी थाती है ऐसी उपलब्धि है जिधर बहुत देर से हमारी नजर जाती है। यदि हम चाहते हैं कि

मनुष्यता बची रहे तो केवल जैव विविधता ही नहीं हमारी संस्कृति की विविधता और भाषाओं की भी विविधता